Issn 0973-9777 वर्ष - 6 अंक - 2 मार्च-अप्रैल 2012

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी

द्विमासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध समीक्षा पत्रिका

www.onlineijra.com

www.onlineijra.com

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रधान सम्पादिका

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

पुनर्निरीक्षक संपादक

प्रो. विभा रानी दुबे,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र,इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र शुक्ल,डॉ. अंशुमाला मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डॉ. राधा वर्मा, डॉ चित्रा सिंह तोमर, डॉ. प्रमोद कुमार मिश्र, डॉ. प्रभा दीक्षित, डॉ. गीता यादव, डॉ. भास्कर प्रसाद द्विवेदी, डॉ. गीता देवी गुप्ता, ज्योति प्रकाश, डॉ. पद्मिनी रविन्द्रनाथ, डॉ. मधु पाराशर, डॉ. प्रवेश भारद्वाज, डॉ. नुपुर गोयल, डॉ. नितिश श्रीवास्तव, मनोज कुमार सिंह, सरिता वर्मा, उमाशंकर राम, अवनीश शुक्ला, विजयलक्ष्मी, कविता, धर्मेन्द्र शुक्ल

अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान), डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

प्रबन्धक

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

सारांश एवं सूचीपत्र

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजूकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

पाठकों से

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

वार्षिक पाठक मूल्य दर

संस्थागत : भारतीय 4,000+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51/- डाक शुल्क,वैदेशिक : 6000+डॉक खर्च,एक प्रति 1000+डाक शुल्क
व्यक्तिगत : 2,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51 डाक शुल्क सहित,वैदेशिक 5000+डाक शुल्क,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

विज्ञापन एवं निवेदन

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है,अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387,
टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com
मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

पत्रिका संयोजन

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

प्रकाशन

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण

मनीषा प्रकाशन

(पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008 बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया, लंका वाराणसी उ.प्र. भारत)

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष-6 अंक-2 मार्च-2012

शोध प्रपत्र

पुराणों में पर्यावरण -मनीषा 1-3
इतिहास के माथे पर चिपकी एक सामयिक -कथा [कलिकथा वाया बाइपास] -डॉ. प्रभा दीक्षित 4-10

समाज का जातिगत परिप्रेक्ष्य और गौतम बुद्ध -डॉ. अनुभा जायसवाल 11-13
सत्याग्रह और दुराग्रह : गाँधी के परिप्रेक्ष्य में एक दृष्टि -डॉ. श्रुति दुबे 14-18

गाँधी जी के आर्थिक विचार : एक अध्ययन -राघव कुमार 19-23
बिहार में सन् 1937 के प्रान्तीय असेम्बली के चुनाव का एक समीक्षात्मक अध्ययन -डॉ. विनीता कुमारी 24-30

भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव : एक समीक्षात्मक अध्ययन (1857-1947) -उमाशंकर राम 31-33
पंजाब के जनपदीय सिक्कों का लिपियशास्त्रीय अध्ययन -डॉ. स्वाती श्रीवास्तव 34-38

लोक संस्कृति के प्रतीक और प्रतीकार्य -मनोज कुमार सिंह 39-45
भारत के मजदूर वर्ग और राष्ट्रीय आन्दोलन के संदर्भ में एक संक्षिप्त अध्ययन -उमाशंकर राम 46-48

व्रत, पर्व एवं पर्यावरण -श्रीमती ऋतु मालवीय एवं डॉ. मीनू अग्रवाल 49-54
विश्व राजनीति में पश्चिमी एशिया के योगदान का पक्ष -उमाशंकर राम 55-58

धार्मिक-सामाजिक मूल्य एवं पर्यावरण -श्रीमती ऋतु मालवीय एवं डॉ. मीनू अग्रवाल 59-65
भारतीय काव्यों में पर्यावरणीय संरक्षण के संकेत -डॉ. मनीषा शुक्ला एवं डॉ. अंशुमाला मिश्रा 66-72

मनुवाद के विरोधी एवं समतामूलक समाज के आधुनिक प्रणेता : माननीय कांशीराम -अनीता कौल 73-75
राजभाषा हिन्दी और उसका संवैधानिक आयाम -डॉ. मोनालिषा बनर्जी 76-80

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2012) **6,49-54**
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 30 जनवरी 2012

व्रत, पर्व एवं पर्यावरण

श्रीमती ऋतु मालवीय* एवं डॉ. मीनू अग्रवाल

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रेषित *व्रत, पर्व एवं पर्यावरण* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र की लेखिका, *श्रीमती ऋतु मालवीय एवं मीनू अग्रवाल, शोध छात्रा, प्राचीन इतिहास, उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) भारत एवं [शोध निर्देशिका] रीडर, प्राचीन इतिहास विभाग, एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) भारत* घोषणा करते हैं कि लेखिका के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेते हैं, क्योंकि हमने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका में प्रकाशित होने की स्वीकृति देते हैं। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह हमारी मौलिक कृति है। हम भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देते हैं। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका को देते हैं।

संस्कार, आस्था, परम्परा, पर्वों से मानव का अटूट रिश्ता है। ये जीवन के वे अभिन्न अंग हैं जो लोगों को परिवार एवं समाज से जोड़कर एक सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं।

एक भारतीय नारी के दिन का प्रारम्भ सूर्यदेव को अर्घ्य देने एवं तुलसी के चौरे में जल देने से होता है। तीज-त्योहार, उत्सव पर्व के दिनों का नारियों को बेसब्री से इंतजार रहता है। ये मांगलिक अवसर किसी विशेष लक्ष्य उ-ेश्य को लेकर बनाये गये हैं। महिलाएँ उपवास रखकर अपनी आस्था श्रद्धा की परम्पराओं का निर्वाह करती हैं। व्रत पर्व से उनका कोरी भावुकता का नाता नहीं है, बल्कि उसमें मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कारण भी है, साथ ही साथ प्रकृति से जुड़ी भावनायें भी हैं। समूची सृष्टि, प्रकृति, नदी, तालाब, कुएँ, वृक्ष, फूल, पौधे, धरती माता, सारी दिशायें, सूर्य, चांद, तारे यहाँ तक कि पशु-पक्षियों के प्रति आस्था, श्रद्धा पूजा भी भावनाओं को अपने अन्तर्मन और आंचल में समेटे नारी का व्रत संसार अनूठा है। सप्ताह के सातों दिन किसी न किसी ग्रह के दिन है। ये ग्रह नक्षत्र हमारे ब्रह्माण्ड के पूरक हैं। रविवार के दिन 'सूर्य' देव के व्रत किया जाता है। सूर्य जो हमारे प्रकृति की शक्ति है, सूर्य देव के द्वारा ही पृथ्वी पर दिन-रात और मौसम का चक्र चलता है। जो हमारे पर्यावरण को संतुलित करता है। सूर्य देव का व्रत संयम एवं नियम का व्रत है। जिससे मनुष्य अनेकानेक रक्त विकारों से भी बचता है। प्राकृतिक चिकित्सा में सूर्य की किरणों का सेवन लिया जाता है। सूर्य पूजा से ही सम्बन्धित कार्तिक मास की पक्ष षष्ठी तिथि को मनाया जाने वाला

* शोध छात्रा, प्राचीन इतिहास, उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) भारत

** [शोध निर्देशिका] रीडर, प्राचीन इतिहास विभाग, एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) भारत। E-mail : meenu.agrawal@hotfmail.com

© लेखक 2012,मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था,एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com, इस प्रपत्र को www.onlineijra.com पर पढ़ें

डाला छठ का पर्व जिसमें स्त्रियाँ अपने सौभाग्य एवं संतान की दीर्घायु की कामना करती हैं। नतमस्तक जल में खड़े होकर अस्ताचल एवं उदित होते सूर्य की पूजा अनेकानेक मौसमी फलों के साथ की जाती है तथा अर्घ्य दिया जाता है जिसके पीछे मनोवैज्ञानिक तथ्य भी सामने आते हैं कि नतमस्तक जल में रहकर इस विधि से होनी वाली पूजा से शरीर में एक नई शक्ति का संवर्धन होता है जो विकारों रोगों से दूर तो करता है साथ ही हमारी आध्यात्मिकता का भी द्योतक है।

इसके अतिरिक्त सोमवार को भगवान महादेव की पूजा व्रत का विधान है जिसमें विल्व पत्र को अर्पण करना, मंगलवार के व्रत में हनुमान जी की आराधना करना उन्हें केला वतुलानी दाल चढ़ाना तथा हनुमान जी का वानर जाति होना, बुद्धवार को भगवान गजानन का जो हाथी के समान मुखमण्डल वाले हैं और उनकी सवारी मूषक की पूजा तथा उनकी पूजा में दूर्वा को चढ़ाना, गुरुवार को केले की वृक्ष की पूजा भगवान विष्णु को समर्पित करना, शुक्रवार को माता लक्ष्मी की पूजा तथा शनिवार को 'पीपल' के वृक्ष की पूजा करना किसी न किसी रूप में 'पर्यावरणीय कारकों' को दर्शाता है तथा उनका संबंध प्राकृतिक क्रिया से स्थापित करता है।

हर व्रत की अपनी विशेषता है। व्रत सम्वत्सर के प्रारम्भ से ही शुरु हो जाते हैं। चैत्र में बासंतिक नवरात्र में बसंत ऋतु की छटा हर ओर परिलक्षित होती है। चैत्र शुक्ल तृतीया को गणगौर की पूजा होती है तथा इसी दिन 'महुए के वृक्ष' की पूजा का भी विधान है। देवी भागवत पुराण में इसका संकेत मिलता है। व्रत में होने वाली पूजा, हवन आदि में प्राकृतिक वस्तुओं का प्रयोग और उनसे जुड़े तथ्य उस समय विशेष का महत्व स्वयं ही दर्शाते हैं।

तत्पश्चात् वैशाख मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को शीतला देवी का पूजन तथा बासी खाने का विधान का भी अलग महत्व है। मान्यता है कि मौसम में परिवर्तन के साथ होने वाली त्वचा की बिमारियाँ, चेचक आदि आते हैं उनसे ये दूर रखकर शरीर को ठंडक प्रदान करते हैं। ऐसा ही ज्येष्ठ मास की कृष्ण अष्टमी को भी होता है। इन सभी अष्टमी में पूजन एवं नवरात्र में देवी पूजन के समय 'नीम के वृक्ष' की पूजा करने का विधान है, माना जाता है कि इसमें देवी का वास होता है। वैसे भी नीम के वृक्ष में अनेक औषधीय गुण होते हैं।

ज्येष्ठ मास की कृष्ण पक्ष की अमावस्या को 'वट' अमावस्या व्रत होता है जिसमें स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घायु की कामना के लिए व्रत करती हैं तथा वट वृक्ष की पूजा करती है। हानि कारक गैसों को नष्ट करने एवं वातावरण को शुद्ध करने में तथा औषधीय गुणों के कारण इस वृक्ष का भी अत्याधिक महत्व है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को 'गंगा' दशहरा का पर्व मनाया जाता है। मानव के उद्धार के लिए भी गंगा का अवतरण इसी दिन पृथ्वी पर हुआ था। गंगा के महत्व से भला कौन परिचित नहीं है। इस अवसर पर अनेकानेक घाटों पर आयोजन होते हैं, पूजा अर्चना होती है।

श्रावण मास तो पर्वों एवं व्रतों का मास ही माना जाता है। सावन के सोमवार का व्रत जो भगवान भोले भण्डारी के लिए होता है जो स्वयं सृष्टि के विनाशक हैं जिनसे सृष्टि की संरचना हुई। श्रावण मास की कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि को कजली तीज का पर्व मानाया जाता है जो प्रकृति की सुन्दरता का प्रतीक माना जाता है। जिसे 'हरियाली' तीज के नाम से भी जाना जाता है। ये त्योहार पूर्णतया सावन की हरियाली के रंग में रचा बसा होता है जो प्रकृति की छटा विखेरता प्रतीत होता है, श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को 'नागपंचमी का पर्व' मनाया जाता है जिसमें नागों की पूजा की जाती है। जो 'प्रकृति प्रदत्त जीव-जन्तु को संरक्षित करने एवं उन पर स्नेह की प्रवृत्ति का द्योतक' है। श्रावण मास की पूर्णिमा को भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन का पर्व तो मनाया ही जाता है इसके साथ-साथ श्रावणी के साथ नये यज्ञोपवीत के धारण करने की परम्परा भी है। गृहस्थ सूत्रों के आधार पर प्रत्येक उत्तम यज्ञ के लिये नये यज्ञोपवीत को धारण करना चाहिए। यज्ञोपवीत के तीन सूत्र पितृ-ऋण, देव-ऋण और ऋषि-ऋण आदि का बोध कराते हैं। यज्ञोपवीत संयम एवं नियम का भी बोध कराते हैं।

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मातायें बहुधा चौथ का व्रत करती हैं जिसमें गाय एवं बछड़े की तथा कहीं-कहीं चन्द्र दर्शन की पूजा का विधान है। जो मनुष्य को प्रकृति के साथ जोड़ता है। इसी के दो दिन बाद हलषष्ठी या ललहीछठ का व्रत होता है जिसमें अनाजों की विशेष प्रकार के पेड़ की तालाब किनारे पूजा होती है, महुवा का प्रयोग इस व्रत में होता है जो पूरी तरह से 'प्रकृति की निर्भरता' को दर्शाता है। भाद्रपद शुक्ल पक्ष की अष्टमी को दूर्वाष्टमी का पर्व होता है। इसमें 'दूब' की पूजा की जाती है, पौराणिक मान्यता के अनुसार दूब की उत्पत्ति वासुकि नाग की पीठ

से मानी गई, ऋग्वेद और अथर्ववेद में दूब का महत्व निरुपित है, धार्मिक कर्मकाण्डों में दूब को शुभ मानते हुए प्रयोग किया जाता है दूब की जड़ में ब्रह्मा, तने में विष्णु, पत्ते में शिव का निवास माना गया है। [दृष्टव्य, प्रज्ञा-जर्नल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका, पर्यावरण विशेषांक, अंक-55, भाग-2, वर्ष 2009-10, पृष्ठ संख्या 59]

आश्विन मास के कृष्ण पक्ष को पितृ पक्ष के नाम से जाना जाता है। पितृ पक्ष की पन्द्रह दिनों में पूर्वजों की मृत्यु की तिथि के दिन उनका श्राद्ध करते हैं। इस दिन गाय, कुत्ते एवं कौओं को पित्तरों के लिए तीन जगह ग्रास निकाल कर दिया जाता है। ऐसी मान्यता है कि उनके माध्यम से दिया गया भोजन पितरों तक पहुँचता है। घर एवं सपिण्ड की सुख समृद्धि की कामना रखने वाले मनुष्य श्रद्धा पूर्वक पितरों का श्राद्ध करते हैं। पशु पक्षी को प्रतीक मानना भी प्रकृति से मनुष्य को जोड़ता है। पितृ पक्ष में ही अष्टमी तिथि को जीवित पुत्रिका व्रत, महालक्ष्मी व्रत तथा पूर्णिमा से अमावस्या तक सभी त्योहार मनाया जाता है जो सौभाग्य एवं संतान के लिए मनाया जाता है।

आश्विन शुक्ल पक्ष के शारदीय नवरात्र का विधान है इसमें देश में जगह-जगह भिन्न-भिन्न प्रकार से शक्ति की अधिष्ठात्री माँ जगत् जननी दुर्गा की पूजा की जाती है। आश्विन शुक्ल पक्ष की विजयदशमी को 'शमी वृक्ष' की पूजा की जाती है। सुख-शान्ति एवं समृद्धि के लिए जिसमें प्रकृति के विभिन्न प्रत्ययों का समावेश का विधान है, आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा के नाम से मनाया जाता है इस दिन भी घरों में एक मास के लिए आकाश दिये जलाने का प्रचलन है।

कार्तिक मास को भी व्रतों एवं त्योहारों का मास माना जाता है, इसी मास में अहोई व्रत होता है जो पुत्र की मंगल कामनाओं के लिए होता है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को करवाचौथ का व्रत किया जाता है। इस दिन गोलार्द्ध स्थिति, चन्द्र कलायें, नक्षत्र प्रभाव एवं सूर्य मार्ग का समावेश शरीरगत अग्नि के साथ समन्वित होकर शरीर एवं मन की स्थिति को ऐसा उपयुक्त बना देता है जो दाम्पत्य सुख को सुदृढ़ एवं चिरस्थायी बनाने में सहायक होता है। इसमें भी 'प्रकृति के साथ सामंजस्य' का अनूठा चित्रण प्रदर्शित होता है। कार्तिक मास की अमावस्या को दीपावली का त्योहार मनाया जाता है जो लक्ष्मी पूजा के साथ-साथ प्रकृति एवं पर्यावरण से भी जोड़ता है। इस दिन साफ-सफाई एवं वातावरण में शुद्धता एवं स्वच्छता का अहसास होता है। वर्षों के बाद गंदगी कीट-पतंगें हो जाते हैं, जिन्हें दीपावली के बहाने से समाप्त कर दिया जाता है। कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की प्रति गोवर्धन पूजा एवं 'अन्नकूट' का पर्व भी प्रकृति एवं प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं को सेवित करना दर्शाता है। जबकि भाई-दूज का अक्षय नवमी को 'आंवले के वृक्ष की' पूजा के साथ उसके नीचे बैठकर खाना खाने का विधान प्रकृति की पूजा एवं सानिध्य का संदेश देता है वृक्ष के नीचे बैठकर इसकी जड़ में पितरों का तर्पण करना चाहिए तथा ब्राह्मणों को दान आदि का विशेष महत्व है। यमुना स्नान एवं भाई दूज की पूजा का भी विधान है वैसे तो पूरे कार्तिक मास में 'यमुना' स्नान एवं पूजा का प्रचलन है। शुक्ल षष्ठी को डालाछठ की पूजा होती है जिसे सूर्य षष्ठी भी कहते हैं। कार्तिक शुक्ल एकादशी देवोत्थान एकादशी का पर्व है जिस दिन तुलसी विवाह शालिग्राम के साथ होना है तथा 'तुलसी' का पूजन होता है। यदि कार्तिक मास के महत्व को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो पायेंगे के 'अश्वत्थपूजा तुलसी वन पायन एवं पूजन, आंवला वृक्ष पूजा, गो-पूजा गंगा यमुना स्नान तथा पूजन गोवर्धन पूजा आदि से पर्यावरण शुद्ध होता है। मनुष्य प्रकृति प्रिय बनता है।' इनसे इहलोक और परलोक दोनों में यश, बुद्धि, बल, धन तथा सत्संग की प्राप्ति होती है।

माघ अथवा पौष मास के पड़ने वाली मकर संक्रांति [खिचड़ी] पर्व को पूरे देश में कहीं ओडम या अन्य प्रकार से मानया जाता है। जब सूर्य देव उत्तरायण होते हैं मकर राशि में प्रवेश करते हैं। प्रयाग के माघ माह का एक मास का कल्पवास शुरु होता है तो मनुष्य को नियम संयम एवं सदाचारी होने का संदेश देता है। मनुष्य को आध्यात्मिक का वातावरण उत्पन्न करता है। माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को ही बसंत पंचमी का पर्व मनाया जाता है। इस दिन सरस्वती पूजा होती है। 'आमों पर बौर' आने के साथ ही बसन्तोत्सव का प्रारम्भ हो जाता है जो प्रकृति में चारों तरफ केसरिया छटा को बिखेरता है। प्राकृतिक सौन्दर्य को अतुल्य बना देता है। फाल्गुन शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को होलिकादहन के साथ होली का पर्व मनाने के साथ प्रकृति को अनेकानेक रंगों से सराबोर कर देता है। फाल्गुन में विषाणु प्रबल हो जाते हैं, अत: उन्हें समाप्त करने के लिए होलिकादहन माध्यम बन जाता है। यह पर्व नये अनाज के आने की खुशी में

मनाया जाता है। होलिका की पूजा में 'गेहूँ की बाली' से पूजा की जाती है जो प्रकृति एवं पर्व को आपस में जोड़ता है।

इसके अतिरिक्त यदि किसी भी अमावस्या को सोमवार पड़ता है तो उस दिन को सोमवती अमावस्या के रूप में मानाया जाता है जिसमें स्त्रियाँ 'पीपल' के वृक्ष की पूजा भगवान विष्णु रूप मानकर करती हैं तथा उसके सूत लपेट कर एक सौ आठ परिक्रमा करती हैं। इसी प्रकार समय-समय पर अन्य छोटे बड़े पर्व भी आते हैं विभिन्न स्थानों विशेष एवं जातियों में जिनका उस स्थान विशेष एवं जाति से तथा वहाँ की भौगोलिक स्थिति एवं पर्यावरण से उनके अटूट सम्बन्ध हो दिखाता है।

इसी क्रम में प्रकृति के अधिष्ठाता देवों के लिए भी विभिन्न मासों की तिथियाँ धार्मिक ग्रंथों [भविष्य पुराण, ब्राह्म पर्व, अध्याय-102] में निर्धारित मिलती है। जिन देवों के लिए जो तिथियाँ निर्धारित हुईं वह उस तिथि के स्वामी कहलाये। उस विशेष दिवस को विशिष्ट मंत्रों से अभिपूजित देव अभीष्ट प्रदान कर्ता माने गये :

देव	तिथि
अग्नि	प्रतिपदा
ब्रह्मा	द्वितीया
कुबेर	तृतीया
गणेश	चतुर्थी
नागराज	पंचमी
कार्तिकेय	षष्ठी
सूर्य	सप्तमी
रूद्र	अष्टमी
दुर्गा	नवमी
यम	दशमी
विश्वेदेवा	एकादशी
विष्णु	द्वादशी
कामदेव	त्रयोदशी
शंकर	चतुर्दशी
चन्द्रमा	पूर्णिमा
पितृ	अमावस्या

इसी प्रकार नक्षत्रों के भी अधिष्ठातृ देव निर्धारित हैं। [भविष्य पुराण, ब्राह्म पर्व, अध्याय-102]

उपरोक्त देव प्राकृतिक संतुलन से जुड़कर हमारे भौगोलिक मण्डल में स्थिरता एवं नियंत्रण में सहायक हैं। व्रत पर्व मनाने की परम्परा सिर्फ भारत में ही नहीं अपितु विश्व में विभिन्न देशों एवं धर्मों को मानने वालों में भी प्रचलित है, वे चाहे मुस्लिम हों या पारसी या इसाई हों। मिश्र, यूरोप के कई देश, मुस्लिम देशों के विभिन्न जलवायु परिवर्तन को उत्सवों के रूप में मनाने के प्रचलन है। यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि इनमें से किसी भी देश में भारत की तरह छः ऋतुओं की परम्परा की अवधारणा दिखाई नहीं देती है। यहाँ की तरह प्रकृति नित नये शृंगार नहीं करती। इस गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी के देश में उत्सवों में आनन्द की भावना होती है जो अन्यत्र कम ही दृष्टिगत होती है।

अध्यात्म के क्षेत्र में चरम उपलब्धि प्राप्त करने वाले देश भारत में तो सर्वत्र आनन्द बिखरा पड़ा है। आकाश के हर रंग को ग्रहण हो, संक्रान्ति हो या पूर्णिमा अमावस, यह देश व्रत स्नान-पूजन और उत्सव के माध्यम से मनाता है। कहा भी गया है ''जैसा देश वैसा भेष''। 'जहाँ प्रकृति अवसाद रहित है, वहाँ उत्सव भी वैसे ही होंगे और वहाँ के त्योहार मनाने के तरीके भी अवसाद को कम करने के लिए होंगे तथा जहाँ प्रकृति नदी बनाकर नाचती है वहाँ तो आनन्द बिखरा ही रहता है। ये व्रत त्योहार प्रकृति के संदेशों के साथ-साथ खुशियाँ भी देते हैं और हमारे पर्यावरण को सुरक्षित एवं सम्बन्धित करने की प्रेरणा देते हैं।'

व्रत, पर्व, उपासना और पर्यावरण

पौराणिक साहित्य में व्रतों की सूची जो सीधे पर्यावरणीय घटकों से जुड़ी है :

जया सप्तमी जब हस्त नक्षत्र हो	शुक्ल पक्ष की सप्तमी को	सूर्य पर्व, अध्याय 96	भविष्य पुराण, ब्राह्म
अपराजिता सप्तमी	भाद्रपद मास शुक्लपक्ष सप्तमी	सूर्य पर्व, अध्याय 98	भविष्य पुराण, ब्राह्म
अशोक व्रत	आश्विन मास शुक्ल प्रतिपदा का पूजन	अशोक वृक्ष पर्व, अध्याय 9	भविष्य पुराण, उत्तर
करवीर व्रत	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा अर्थात करवीर	लाल कनेर पर्व, अध्याय 10	भविष्य पुराण, उत्तर
यम द्वितीया	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया	यमुना नदी पर्व, अध्याय 15	भविष्य पुराण, उत्तर
मधूक तृतीया	फाल्गुन शुक्ल तृतीया	मधूक वृक्ष पर्व, अध्याय 16	भविष्य पुराण, उत्तर
मेघपाली तृतीया	आश्विन कश्ष्ण तृतीया	मेघपाली लता पर्व, अध्याय 17	भविष्य पुराण, उत्तर
शुभ सप्तमी व्रत	आश्विन शुक्ल सप्तमी	कपिला गौ पर्व, अध्याय 51	भविष्य पुराण, उत्तर
दूर्वा अष्टमी	भाद्रपद शुक्ल अष्टमी	दूर्वा पर्व, अध्याय 56	भविष्य पुराण, उत्तर
श्रीवृक्ष नवमी वृक्ष	भाद्रपद शुक्ल नवमी	बिल्व वृक्ष पर्व, अध्याय 60	भविष्य पुराण, उत्तर
गोवत्स द्वाद्वसी	कार्तिक शुक्ल द्वाद्वशी	गाय बछडे पर्व, अध्याय 69	भविष्य पुराण, उत्तर
सावित्री व्रत	ज्येष्ठ अमावस्या	वट वृक्ष पर्व, अध्याय 102	भविष्य पुराण, उत्तर
कदली व्रत या रम्भा व्रत	भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी	कदली वृक्ष पर्व, अध्याय 91–92	भविष्य पुराण, उत्तर

पौराणिक साहित्य में प्रत्येक मास में पड़ने वाले पर्व

मास	पर्व
चैत्र	संवत्सर प्रतिपदा व्रत, अरून्धती व्रत, सूर्य षष्ठी, रामनवमी, हनुमान जयन्ती, अशून्यशयन व्रत
वैशाख	अक्षय तृतीया, निम्ब सप्तमी, गंगा सप्तमी, परशुराम जयन्ती,
ज्येष्ठ	वट सावित्री, निर्जला एकादशी, गंगा दशहरा
आसाढ	हरिशयनी एकादशी,स्कन्दषष्ठी, सूर्य सप्तमी, व्यास पूर्णिमा,
श्रावण	नाग पंचमी, दूर्वा अष्टमी, श्रावणी पूर्णिमा,
भाद्रपद	हरतालिका तीज, गणेश चतुर्थी, ऋषि पंचमी, मुक्ताभरण सप्तमी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, वामन द्वाद्वशी, अनन्त चतुर्दशी, अगस्त व्रत,
आश्विन	उपांगललिता, महालय, देवी नवरात्र, विजयदशमी, शरदपूर्णिमा,

कार्तिक	करवाचौथ अथवा कर्क चतुर्थी, धनत्रयोदशी, नरक चतुर्दशी, दीपावली,गोवर्धपूजा, यमद्वितीया, वैकुण्ठ चतुर्दशी, भीम पंचक, हरिबोधिनी, कार्तिक पूर्णिमा, मनोरथ पूर्णिमा,
मार्गशीर्ष	कालभैरवाष्टमी, दत्त जयन्ती,
पौष	भद्राष्टमी, मकर संक्रान्ति,
माघ	बसंत पंचमी, अचला सप्तमी, भीमाष्टमी
फाल्गुन	महाशिवरात्रि , होलिका

भारत में शिक्षा तथा ज्ञान की खोज केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए ही नहीं अपितु 'धर्म' के मार्ग पर चल कर 'मोक्ष' प्राप्त करने का एक क्रमिक प्रयास था। भारत के ऋषि मुनियों ने अपने चतुर्दिक व्याप्त प्रकृति के क्षमता का उपयोग अनुभवजन्य ज्ञान, चिन्तन मनन और संरक्षण की सचेत विचारधारा के साथ किया ; इसीलिए उन्होंने आश्रमों, गुरुकुलों की स्थापना प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण, कोलाहल से दूर व एकान्त वन्य प्रदेश में की। नदियों, झरनों, जलप्रपातों, तालाबों से निरन्तन निर्झरण की शिक्षा, कन्दमूल फलों के सेवन से प्राकृतिक विटामिनों की उपलब्धता, मन्द सुगन्ध हवाओं की शुद्धता से श्वशन क्रियाओं की अबाध्यता तथा वल्कल वस्त्रों के प्रयोग से एलर्जी मुक्त जीवन की प्राचीन परम्परा पर्यावरणीय संचेतना का दृष्टान्त है।

मानव मूल्यों के रूप में प्रत्येक मनुष्य में उदारता और कृतज्ञता का गुण होना अति आवश्यक है। मनुष्य को यह समझना होगा कि प्रकृति अपने हित के लिए अपने संसाधनों का प्रयोग कभी नहीं करती, वह तो स्वयं मानवों पर निर्भर रहती है, मानवों के लिए असीमित संसाधनों को उपलब्ध कराती है। मानव को प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का भव रखकर सौहार्द एवं संतोष के साथ प्रकृति के साथ सन्तुलन बनाये रखने में पर्वों, उत्सवों, व्रतों की महनीय भूमिका रही है। व्रत, पर्व, उत्सवों की परम्परा प्रकृति के संरक्षण की अनूठी विधा है जो भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है।

स्रोत ग्रंथ

ब्रह्म पुराण (1923) -(अनु.) तारिणीश झा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद
मत्स्य पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर
विष्णु पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर
राय, एस. एन. -पौराणिक धर्म और समाज, पंचनद पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद
अग्रवाल, मीनू (2003) -भारत में वृक्षपूजा एवं जल संचयन की परम्परा, भारत संस्कृत परिषद्, इलाहाबाद
कल्याण, वेदकथांक, वर्ष -73, अंक -1-2, 1 1999, गोरखपुर
कल्याण, व्रतपर्वांक, वर्ष -84, अंक -3, 2010, गीता प्रेस गोरखपुर
कल्याण, व्रतपर्वांक, वर्ष -78, अंक -1, 2008, गीता प्रेस गोरखपुर
प्रज्ञा-जर्नल, अंक -55, भाग -2, 2009-10, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

लेखकों के लिए निर्देश

शोधपत्र का अनुरोध

लेखक अपना शोधपत्र डॉ. मनीषा शुक्ला ,प्रधान सम्पादिका आन्वीक्षिकी भारतीय शोध पत्रिका को ई-मेल पर प्रेषित करें। (maneeshashukla76@rediffmail.com)

प्राप्त शोधपत्र पत्रिका में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोधपत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोधपत्र का कोई भी भाग प्रधान सम्पादिका के अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है। कृपया अपने शोधपत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें,शीर्षक ;सारांश ;पाण्डुलिपि ;पुस्तक संदर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु अपना नाम पता पाण्डुलिपि पर न दें।

शीर्षक :शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें,किन्तु अपना पूरा नाम,पता,संस्था जहाँ पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका विषय,दूरभाष अथवा मोबाइल,फैक्स,ई-मेल पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें। उपर्युक्त तथ्य आपके शोधपत्र के शब्द सीमा के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

सारांश :कृपया शोधपत्र का सारांश 120 शब्दों में दें।

पाण्डुलिपि :इसके अन्तर्गत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी ; जो 5 से 10 पृष्ठ तक होनी चाहिये। शोधपत्र 10 पृष्ठ से (सारांश,शब्द संक्षेप,संदर्भ सूची समेत)अधिक प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। अन्यथा वृहद् शोधपत्र(10 पृष्ठ से अधिक) प्रकाशन में देर भी हो सकती है। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि शोधपत्र पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। शोधपत्र प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने इसका पूरा ध्यान रखा जाता है फिर भी कोई त्रुटि पाये जाने पर लेखक संशोधित रीप्रिंट प्राप्त कर सकता है ; पत्रिका में संशोधन की व्यवस्था नहीं है।

सन्दर्भ वर्णमालाक्रामानुसार :शोधपत्र के समापन पर कृपया संदर्भ वर्णमाला क्रमानुसार दें। पत्रिका का वर्ष,लेखक, पृष्ठ संख्या,भाग इत्यादि विस्तार से दें। पुस्तक शीर्षक या पत्रिका शीर्षक इटालिक दें।

पुस्तक :प्रकाशक का नाम,संस्करण संख्या,प्रकाशन वर्ष,लेखक का नाम,पुस्तक का नाम,पृष्ठ संख्या

पत्रिका :पत्रिका का नाम,लेख का शीर्षक,लेखक का नाम,प्रकाशक का नाम,अंक संख्या/माह,वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

समाचार पत्र :प्रकाशक,तिथि,सन् ,पृष्ठ संख्या,

इण्टरनेट :वेबसाइड,पृष्ठ संख्या,मुख्य शीर्षक,अन्तः शीर्षक।

मानचित्र एवं सारणी :मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोधपत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में दें(उदाहरण सारणी संख्या 1)

विशेष :कृपया अपना शोधपत्र ई-मेल करने के बाद डॉक से अवश्य भेजें। अपने शोधपत्र के साथ-साथ अपना वायोडाटा, फोटो,स्वपता लिखा लिफाफा(25 रू के टिकट सहित)भेजें। शोधपत्र यदि हिन्दी भाषा में है तो ए.पी.एस प्रियंका रोमन(ए.पी.एस. कार्पोरेट 2000++)में तैयार सी.डी के साथ दें। शोधपत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर लेखक को स्वीकृति पत्र प्रेषित कर दिया जायेगा। ई-मेल से प्राप्त शोधपत्र हेतु ई-मेल से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोधपत्र प्रेषित करने के पूर्व प्रधान सम्पादिका से दूरभाष पर अवश्य सम्पर्क करें। सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति में सम्मिलित करने का अंतिम निर्णय संस्था का होगा।

सदस्यों से निवेदन है कि वर्ष में 20 सदस्य पत्रिका से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

Search Research papers of The Indian Journal of Research Anvikshiki-ISSN 0973-9777 in the Websites given below

http://nkrc.niscair.res.in/BrowseByTitle.php?keyword=A

National Knowledge Resource Consortium

www.icmje.org

ICMJE INTERNATIONAL COMMITTEE of MEDICAL JOURNAL EDITORS

www.scholar.google.co.in

Google scholar

www.kmle.co.kr

KMLE 의학 검색 엔진
Korean medical library engine
http://www.kmle.co.kr

www.fileaway.info

File Away

www.banaras.academia.edu

Academia.edu
follow research

www.www.edu-doc.com

Edu-Doc

www.docslibrary.com

docslibrary
Search Any Document Files Over The Internet!

www.dandroidtips.com

MyCelular.ORG

www.printfu.org

pdf search engine
ARTAPP.NET

www.cn.doc-cafes.com

DOC CAFES

www.freetechebooks.com

Tech eBooks

www.google.com

Google India

IJRA

ISSN 0973-9777
09739777
₹ 700/-